www.xtrapapers.com

Cambridge IGCSE

Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	

CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER	

6415289194

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **October/November 2018**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

KI 148044/3
© UCLES 2018

CAMBRIDGE
International Examinations

www.xtrapapers.com

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–5

निम्नलिखित लेख 'पर्यावरण सुरक्षा की सेनानी मल्लिका प्रसाद' पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मल्लिका प्रसाद पर्यावरण सुरक्षा के तहत आयोजित अंटार्क्टिक अभियान के लिए चुनी गईं प्रथम भारतीय महिला हैं। इसके पहले 23 वर्ष की उम्र में उन्हें 'टीच फॉर इंडिया' की छात्रवृत्ति मिली थी। उस दौरान छोटे बच्चों को पर्यावरण की सुरक्षा के नियम सिखाते समय वे अक्सर उन नियमों को जीवन में लागू करने के उपाय के विषय में सोचा करती थीं। छात्रवृत्ति पूरी होते ही मल्लिका 'पर्यावरण बचाओ' का संदेश देने के लिए अकेली भारत-भ्रमण के लिए निकल पड़ीं। अपने संदेश को जनमानस तक पहुंचाने के लिए उन्होंने दैनिक जीवन की कुछ ऐसी आदतों पर ध्यान देने का निश्चय किया जिनको आसानी से बदला जा सके और जो पर्यावरण के अनुकूल हों।
मल्लिका ने अपने अभियान की शुरुआत हिमाचल प्रदेश से की। अपने रोज़मर्रा के व्यवहार के लिए यात्रा के दौरान प्लास्टिक के बरतन, जिन्हें एक बार उपयोग में लाने के बाद फेंक दिया जाता है, की जगह स्टील की बोतल, और लकड़ी से बना कॉफी का प्याला रखा। वे दांत मलने के लिए टूथपेस्ट की जगह दंत मंजन का पाउडर और केश धोने के लिए शैम्पू की जगह साबुन का इस्तेमाल करती थीं। खाने के सामान के ख़ाली पैकेट रास्ते में फेंकने की जगह एक कपड़े की थैली में जमा करती थीं ताकि पर्यावरण प्रदूषित न हो।
इस प्रकार के सहज उपायों से पर्यावरण की देखभाल करना मल्लिका ने बचपन में अपनी दादी से सीखा था। दादी किसी भी चीज़ को फेंकने की जगह उसका पुनरुद्धार करके उसे फिर से उपयोगी बना लेती थीं। उनकी साड़ी कहीं से फट जाए तो वे उसके साबुत हिस्से को निकाल कर उससे बच्चों के कपड़े सिल लेती थीं। पहले दिन की बची दाल से अगले दिन आटा गूंध कर स्वादिष्ट पराठे बना लिया करती थीं। घर की किसी भी चीज़ की बरबादी उन्हें स्वीकार नहीं थी। अब मल्लिका अपने बचपन में सीखे इस मूल्यवान संदेश का पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रचार कर रहीं हैं। वे लोगों को बताती हैं कि पर्यावरण-संरक्षण के उपाय करने कठिन नहीं हैं केवल अपनी सोच और आदतें बदलने की ज़रुरत है। उदाहरण के लिए मंजन और स्नान करते समय नल के पानी को व्यर्थ में न बहने दें और टेलीविज़न, कम्प्यूटर आदि बिजली से चलने वाले यंत्रो का उपयोग करने के बाद उनके स्विच बंद करें। उनको विश्वास है कि अपने दैनिक जीवन की आदतों और सोचने के तरीकों में परिवर्तन लाने से पर्यावरण की देखभाल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

www.xtrapapers.com

1 मल्लिका प्रसाद का चयन किसलिए किया गया?

....[1]

2 बच्चों को पढ़ाते समय मल्लिका क्या योजना बना रहीं थीं?

....[1]

3 मल्लिका स्टील की बोतल और लकड़ी के प्याले का उपयोग किस विशेष कारण से करती थीं?

....[1]

4 खाने की बर्बादी को रोकने के लिए दादी क्या करती थीं?

....[1]

5 पानी और बिजली की खपत कम करने के लिए कौन से कदम उठाने चाहिएं?

....

....[2]

[अंक:6]

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

अभ्यास 2 प्रश्न 6

वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेकर भारत यात्रा का एक सुनहरा अवसर

हौंस्लो हिंदी शिक्षा केंद्र

336 नेविल क्लोज़
हौंस्लो, मिडिलसेक्स टी डब्ल्यू3 4जे जी
दूरभाष 00-44 20 86177335
ई मेल: hhsk@yahoo.co.uk

हिंदी वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए स्कूली बच्चे आवेदन करें।

पिछले वर्ष हुई वादविवाद प्रतियोगिता की लोकप्रियता को देखते हुए और इंग्लैंड में रहने वाले स्कूली बच्चों में हिंदी सीखने का उत्साह बढ़ाने के लिए इस वर्ष भी एक वादविवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। सोमवार 24 अक्तूबर और शनिवार 29 अक्तूबर को दो सत्रों में होने वाली प्रतियोगिता में दस से सोलह वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। प्रतियोगियों की आयु के अनुसार दस से बारह वर्ष, तेरह से चौदह वर्ष और पन्द्रह से सोलह वर्ष की तीन अलग-अलग श्रेणियां बनाई गई हैं।
प्रत्येक श्रेणी में प्रथम आने वाले प्रतियोगी को भारत यात्रा का वापसी टिकट पुरस्कार में मिलेगा। कृपया आवेदन पत्र के साथ हिंदी भाषा सीखने के अपने अनुभव और अपने अभिभावक की अनुमति संलग्न करें। आवेदन पत्र भेजने की अंतिम तिथि 10 अक्तूबर है।
सारिका की उम्र 14 वर्ष है। पिछले तीन वर्षों से वह अपने घर के पास वाले चर्च हॉल में हर शनिवार को 10–12 बजे हिंदी सीखने जाती है। जबसे उसकी नानी भारत से आई हैं वह उनके साथ हिंदी में बातचीत करती है और दूरदर्शन पर बॉलीवुड के सिनेमा देखती है। जिसके कारण उसे हिंदी बोलने का अभ्यास तो हुआ ही उसका हिंदी का शब्दज्ञान भी बढ़ा है। हिंदी की परीक्षा में इस वर्ष कक्षा के 20 विद्यार्थियों में उसका प्रथम स्थान आया। उसकी शिक्षिका उसकी हिंदी की प्रगति से बहुत खुश हैं। वह ईलिंग अकादमी में पढ़ती है। 4 बजे स्कूल से घर लौटने पर गृहकार्य करने के बाद कुछ और करने के लिए यथेष्ट समय नहीं बचता। लिहाज़ा, सप्ताह के दौरान वह प्रतियोगिता में नहीं जाना चाहती। इसलिए सप्ताहांत में दोपहर का समय ही सर्वाधिक उचित है। सारिका लंदन के वैस्ट ईलिंग इलाके में 19 एम्हर्स्ट रोड, डब्ल्यू5 3ए आर में रहती है, उसका ई-मेल s.g@hotmail.com और उसका टेलीफोन नम्बर 020 85370208 है।

www.xtrapapers.com

आप अपने को सारिका मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

हिंदी वादविवाद प्रतियोगिता

हौंस्लो हिंदी शिक्षा केंद्र

336 नेविल क्लोज़
हौंस्लो, मिडिलसेक्स टी डब्ल्यू3 4जे जी
दूरभाष 00-44 20 86177335
ई मेल: hhsk@yahoo.co.uk

आवेदक का नाम: सारिका

(सही का निशान ✓ लगाएं) आयु 10–12 ☐ 13–14 ☐ 15–16 ☐ [1]

ई-मेल: s.g@hotmail.com

पूरा पता: .... [1]

विद्यालय का नाम: .... [1]

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सप्ताह के दौरान।

☐ सप्ताहांत में। [1]

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक

☐ दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक [1]

हिंदी भाषा संबंधी अपनी उपलब्धियों की कोई 2 जानकारियाँ दीजिए

....

....

.... [2]

[अंक:7]

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

'स्वच्छ जल का महत्व' शीर्षक निम्नलिखित लेख पढ़ें और अगले पृष्ठ पर दिए गए शीर्षकों के अंतर्गत नोट बनाएं।

विश्व में लगभग एक अरब लोगों को पीने के लिए साफ़ पानी नहीं मिलता। आंकड़ों के अनुसार हर आठ व्यक्ति में से एक व्यक्ति स्वच्छ पेय जल से वंचित है। प्रत्येक वर्ष 315,000 बच्चे दूषित पानी पीने के कारण हैजा, टायफायड आदि जैसी बीमारियों के शिकार होते हैं। या यह कह सकते हैं कि प्रतिदिन 900 बच्चे या प्रति दो मिनट में एक बच्चे की अकाल मृत्यु हो जाती है। पश्चिम अफ्रीका में जन्म से लेकर पांच वर्ष तक की उम्र के बच्चों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण स्वच्छ पेय जल का अभाव है।

यों तो पश्चिम अफ्रीकी देशों में पानी की कमी का बुरा असर समाज में सभी पर होता है, पर इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव स्त्रियों और लड़कियों को सहना पड़ता है। उनको प्रति दिन मीलों पैदल चलकर नदी और पोखरों से पानी ढोकर लाना पड़ता है। वह भी ऐसा पानी जो मनुष्य के पीने लायक भी नहीं होता और जिसे पीकर नाना प्रकार की बीमारियों का होना लगभग निश्चित है। छोटी उम्र की लड़कियां सुबह के समय स्कूल जाने की जगह अपना समय कड़ी धूप में मीलों पैदल चलकर दूषित पानी ढोकर लाने में व्यतीत करती हैं। इसका बुरा असर उनके स्वास्थ्य और शिक्षा दोनों पर होता है। ऐसी स्थिति में उनके सामने दो ही विकल्प हो सकते हैं – दूषित पानी पीयें अथवा बिना पानी पीये रहें। दोनों ही विकल्प जीवन को संकट में डाल सकते हैं। पानी की कमी का प्रभाव लोगों की जीविका पर पड़ता है। कृषिप्रधान देश में फसल उपजाने के लिए पानी नितांत आवश्यक है। सूखा पड़ने अर्थात सिंचाई के लिए पानी न मिलने से फसल की बरबादी किसान को गरीबी और भुखमरी के चंगुल में दबोच सकती है।

कुछ अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्थाएं इस कठिन समस्या को सुलझाने की भरसक चेष्टा कर रही हैं। उनका उद्देश्य पीने के पानी का शुद्धीकरण, गाँवों में कुएँ खोदकर स्वच्छ जल उपलब्ध कराना, लोगों को अपनी सहायता स्वयं करने की सीख देना आदि है। यदि प्रत्येक गाँव में ट्यूबवेल से स्वच्छ जल मिल सके तो वहाँ रहने वाली स्त्रियाँ खेती में हाथ बटा सकेंगी और लड़कियाँ स्कूल जाकर अपनी शिक्षा पूरी कर सकेंगी।

भूपेन्द्र और हंसा पश्चिम अफ्रीका के बुरकीना फासो गांव में तीस वर्षों से रह रहे हैं। प्राथमिक स्कूल के शिक्षक के रूप में काम करते समय भूपेन्द्र ने न जाने कितने विद्यार्थियों को दूषित पानी पीने से हुई बीमारियों का शिकार होते देखा था। नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के बाद अपने देश भारत लौट कर चैन का जीवन बिताने की जगह उन्होंने गाँव में रहकर अपनी बचत की पूंजी से 'स्वच्छ जल अभियान' शुरु किया। उनका उद्देश्य आसपास के गाँवों में कुँए खुदवाना है ताकि गाँव की स्त्रियों को चिलचिलाती धूप में दूषित पानी ढोकर लाने के लिए मीलों पैदल ना चलना पड़े, लड़कियां अपनी शिक्षा पूरी करके आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बन सकें और छोटे बच्चे उस पानी को पीकर अकाल मृत्यु का शिकार न बनें। वे जानते हैं कि उनका यह प्रयास एक अत्यंत कठिन समस्या को सुलझाने के लिए समुद्र में एक बूंद के समान है, लेकिन बूंद बूंद से ही तो समुद्र बनता है!

www.xtrapapers.com

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है 'स्वच्छ जल का महत्व'। इस लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिस पर आपका भाषण आधारित होगा।

7 स्वच्छ जल की कमी से होने वाले तीन दुष्प्रभाव

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

8 स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के उपाय

- .... [1]
- .... [1]

9 समस्या का समाधान करने में सहायक

- .... [1]
- .... [1]

[अंक:7]

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

अभ्यास 4 प्रश्न – 10

निम्नलिखित आलेख 'रहस्यमय स्टोनहेंज' पढ़कर उसके अतीत और वर्तमान काल में महत्त्व का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

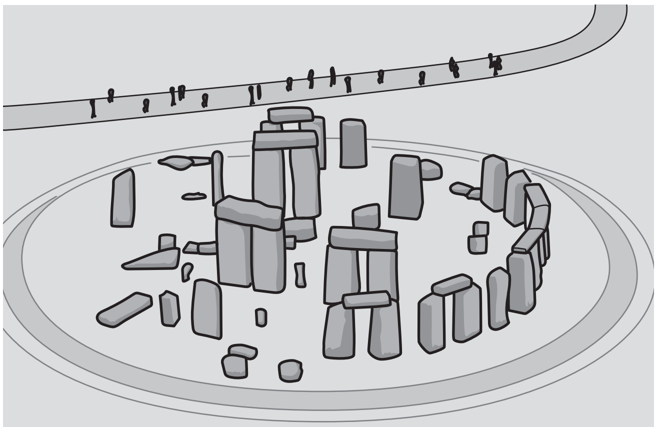

इंग्लैण्ड की विल्टशायर काउंटी में एम्सबरी से दो मील पश्चिम और सॉल्सबरी से 8 मील उत्तर में अवस्थित स्टोनहेंज एक अत्यंत प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक स्मारक है। अपने अद्भुत पुरातात्त्विक महत्त्व और अभूतपूर्व स्मारकों के चक्राकार जमघट के कारण सन 1986 में इसकी गणना 'विश्व धरोहर स्थल' में की गई। पुरातत्त्व विशेषज्ञों के अध्ययन के लिए शोध का एक मूल्यवान स्रोत स्टोनहेंज इंग्लैण्ड के प्रमुख दर्शनीय स्थानों में से भी एक है। पत्थरों से निर्मित इस अभूतपूर्व स्मारक का निर्माण ईसा पूर्व 2500–5000 की अवधि में अलग-अलग चरणों में हुआ माना जाता है। इसको बनाने के लिए दूर-दूर से पत्थर लाए गए थे। नीले पत्थर 150 मील दूर प्रेसली पहाड़ी से और सारसन के पत्थर 19 मील दूर मर्लबॉरा से अपनी विशेष बनावट के कारण लाए जाकर एक चक्राकार ढांचे में स्थापित किए गए थे।
स्टोनहेंज की स्थापना कब, किसने और क्यों की इस विषय में अनेक प्रकार की धारणाएँ हैं। उनमें डेनिश राजाओं के राज्याभिषेक का स्थल, द्राविद मंदिर, सूर्यग्रहण की सूचना देने वाला खगोलीय या ज्योतिषशास्त्र का संगणक, पूर्वजों की पूजा करने का मंदिर आदि प्रमुख हैं। कुछ लोग स्टोनहेंज को रोगों से छुटकारा दिलाने वाला एक पवित्र स्थल भी मानते हैं। पुरातात्त्विक दृष्टि से पत्थरों से बना यह चक्र एक अत्यंत जटिल स्मारक है। इसके परस्पर संबन्धित स्मारक नव-पाषाण काल के अंतिम भाग और कांस्ययुग के लोगों की जीवन पद्धति, विशेषकर इनमें दफ़नाए हुए 350 से भी अधिक समाधियों के टीले, मरणोंपरांत किए जाने वाले अंतिम संस्कार की प्रथा को समझने में सहायक हैं। खुदाई के समय वहाँ रोमन काल के मिट्टी के बरतन, पत्थर और धातु से बनी चीजें और सिक्के मिले हैं।
सामान्यत: यह माना जाता है कि स्टोनहेंज सूर्य की गतिविधि की सीध में बना एक प्रागैतिहासिक मंदिर है। वर्षों से स्टोनहेंज और पुरातन खगोल विज्ञान के सम्बन्ध का अध्ययन होता आ रहा है। सूर्य, चन्द्र और अन्य ग्रहों के साथ इसके संबन्ध पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। कर्क संक्रांति अर्थात गर्मी की ऋतु के समय यह स्मारक सूर्योदय की दिशा में और मकर संक्रांति अर्थात सर्दी की ऋतु में सूर्यास्त की दिशा में अवस्थित है। प्रतिवर्ष कर्क और मकर संक्रांति के समय सूर्योदय देखने के लिए यहाँ हज़ारों लोग एकत्रित होते हैं। अतीत की उपलब्धियों का यह एक अद्भुत प्रतीक है। आधुनिक युग में इसके साथ एक विशिष्ट प्रकार की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता जुड़ी हुई है जो लोगों में विस्मय, विनय और आदर की भावना जगाती है और जिसके कारण दूर-दूर से आने वाले हज़ारों दर्शक इसकी ओर खिंचे चले आते हैं।

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

सारांश

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक:10]

© UCLES 2018

[कृपया पृष्ठ उलटें]

www.xtrapapers.com

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 11–16

निम्नलिखित आलेख 'केसर की खेती' को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खाना बनाने के मसालों में केसर का एक विशेष स्थान है। केसर क्रोकस के बैंगनी रंग के फूल के गहरे लाल रंग के पराग के रेशे से बनता है। यह खाद्य व्यंजनों के रंग और सुगंध में बढ़ोतरी करता है।
क्रोकस के पौधे के बल्ब या बीज जून के महीने में, जब सर्दियों के बाद सूर्य की किरणें धरती को गर्म कर चुकी होती हैं, सूरज की दिशा में ढलाउ, पोरस और उपजाऊ जमीन में बोये जाते हैं। इसके पौधे को पनपने के लिए सूरज की रोशनी और गर्माहट अति आवश्यक होती है। धूप की कमी से क्रोकस के फूल में सुगंध की कमी हो सकती है। क्रोकस के पौधे 20–30 सेंटीमीटर तक बढ़ते हैं। प्रत्येक पौधे में तीन से चार तक फूल खिलते हैं और हरएक फूल के पराग में गहरे लाल रंग के तीन रेशे रहते हैं जिन्हें एकत्रित करके सुखाने पर केसर बनता है। क्रोकस के बैंगनी रंग वाले फूल अक्तूबर मास के मध्य से नवंबर के प्रथम सप्ताह तक पूरी तरह से खिल जाते हैं। शीघ्र ही फूलों की कटाई शुरू हो जाती है। फूलों को बेंत की डलिया में एकत्रित करके उनके पराग की बालियों या रेशों को अलग किया जाता है। फूल का कोई भी हिस्सा बेकार नहीं जाता। उसकी पंखुरियों की सब्ज़ी और डंठल से जानवरों का चारा और गहरे लाल रंग के रेशे से केसर बनता है। वज़न के हिसाब से केसर संसार के सबसे महंगे पदार्थों में गिना जाता है।
केसर के अनेक उपयोग हैं जिनमें ईरानी, भारतीय, अरबी, टर्किश और यूरोपियन पाकशैली के व्यंजनों में केसरिया रंग और सुगंध का संचार करना मुख्य है। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग कपड़े रंगने, सौंदर्य-प्रसाधन बनाने, पारंपरिक औषधि में मानसिक तनाव और विषाद का इलाज़ करने के लिए और हिंदू एवं बौद्ध धर्म में धार्मिक अनुष्ठान में किया जाता है। ईजिप्ट की महारानी क्लीओपेट्रा अपनी त्वचा की सुंदरता बढ़ाने के लिए स्नान के पानी में केसर घुलवाती थीं। सिकंदर महान लड़ाई में लगे अपने घावों को भरने के लिए ईरानी केसर का प्रयोग अपनी चाय, चावल और स्नान के जल में करते थे।
केसर की खेती सबसे पहले कहाँ शुरू हुई इस विषय में अलग-अलग मत हैं। संभवत: इसकी पहल ग्रीस और उसके आसपास में हुई और वहां से दक्षिण-पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका तथा अमेरिका तक होने लगी। सोलहवीं शताब्दी में पूर्वी इंग्लैंड के चिप्पिंग वॉल्डन नामक स्थान में केसर की खेती आरम्भ हो गई थी। वॉल्डन शहर केसर की खेती और व्यापारिक केंद्र होने के कारण 'सैफ्रॉन वाल्डन' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। केसर की लगभग 80% खेती ईरान में होती है। केसर की खेती के लिए भारतवर्ष में जम्मू और कश्मीर का प्रमुख स्थान है। श्रीनगर के समीप पामपुर में केसर की खेती होती है। ऐतिहासिक सूत्रों के अनुसार भारतवर्ष में ईरानी शासक केसर के बल्ब या बीज लाए थे जिन्हें पामपुर की धरती में बोया गया था। किंतु एक कश्मीरी मिथक के अनुसार दो विदेशी सूफ़ी संत, ख़्वाज़ा मसूद वली और शेख शरीफुद्दीन वली कश्मीर आकर अस्वस्थ हो गए थे। एक स्थानीय मुखिया के इलाज़ से ठीक हो जाने पर बदले में उन्होंने मुखिया को केसर का बल्ब दिया। आज भी केसर की कटाई के समय उन दोनों सूफ़ी संतों की स्मृति में प्रार्थना की जाती है और पामपुर में उनकी यादगार में बना सुनहरा गुम्बदाकार मक़बरा भी इसका प्रमाण है। किंतु प्रसिद्ध कश्मीरी कवि और विद्वान यूसुफ़ तेंग के अनुसार ये दोनों ही बातें कहानी भर हैं।

www.xtrapapers.com

कृपया प्रश्न 11 से 14 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण – क्रोकस के फूल लाल रंग के होते हैं । औचित्य – क्रोकस के फूल बैंगनी रंग के होते हैं।	☐	✓
11 क्रोकस के फूल की पंखुरियों से केसर बनता है।	☐	☐
12 केसर की खेती के लिए पोरस, ढलाउ और उपजाऊ मिट्टी ज़रूरी होती है।	☐	☐
13 केसर का उपयोग भोजन के व्यंजन में रंग और सुगंध लाने के लिए होता है।	☐	☐
14 क्रोकस के पराग से केसर निकालने के बाद फूल को फेंक दिया जाता है।	☐	☐

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

15 सिकंदर महान ने केसर का उपयोग किसलिए किया?

....[1]

16 कश्मीर में सूफी संतों द्वारा केसर के बल्ब लाने की मान्यता के दो प्रमाण लिखिए।

....

....[2]

[अंक:10]

www.xtrapapers.com

अभ्यास 6 प्रश्न 17

‘स्कूलों में संगीत और कला की अपेक्षा विज्ञान और गणित के विषय ही महत्वपूर्ण होने चाहिएं।’ इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने स्कूल की पत्रिका के लिए एक लेख लिखिए।
आपका लेख विषय की जानकारी पर केंद्रित होना चाहिए।
आपका लेख 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
लिखित विवरण पर अंतर्वस्तु के लिए 10 अंक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंक निर्धारित हैं।

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

[अंक:20]

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

BLANK PAGE

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

BLANK PAGE

© UCLES 2018

www.xtrapapers.com

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.